



Karanveer Kakkar

24 Jul 2018

05:17 AM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 120466101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 23-24/07/2018
दिन _____: सोम-मंगलवार
जन्म समय _____: 05:17:00 घंटे
इष्ट _____: 59:09:04 घटी
स्थान _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 04:55:52 घंटे
वेलान्तर _____: -00:06:30 घंटे
साम्पातिक काल _____: 01:02:31 घंटे
सूर्योदय _____: 05:37:22 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:17:24 घंटे
दिनमान _____: 13:40:02 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 06:57:09 कर्क
लग्न के अंश _____: 01:37:58 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी _____: वृश्चिक - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: ज्येष्ठा - 3
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: ब्रह्म
करण _____: बव
गण _____: राक्षस
योनि _____: मृग
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: कीटक
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: यी-यीशू
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: सिंह

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1940	श्रावण	2
पंजाबी	संवत : 2075	श्रावण	9
बंगाली	सन् : 1425	श्रावण	8
तमिल	संवत : 2075	आदी	8
केरल	कोल्लम : 1193	कर्कदम	8
नेपाली	संवत : 2075	श्रावण	9
चैत्रादि	संवत : 2075	आषाढ़	शुक्ल 12
कार्तिकादि	संवत : 2075	आषाढ़	शुक्ल 12

पंचांग

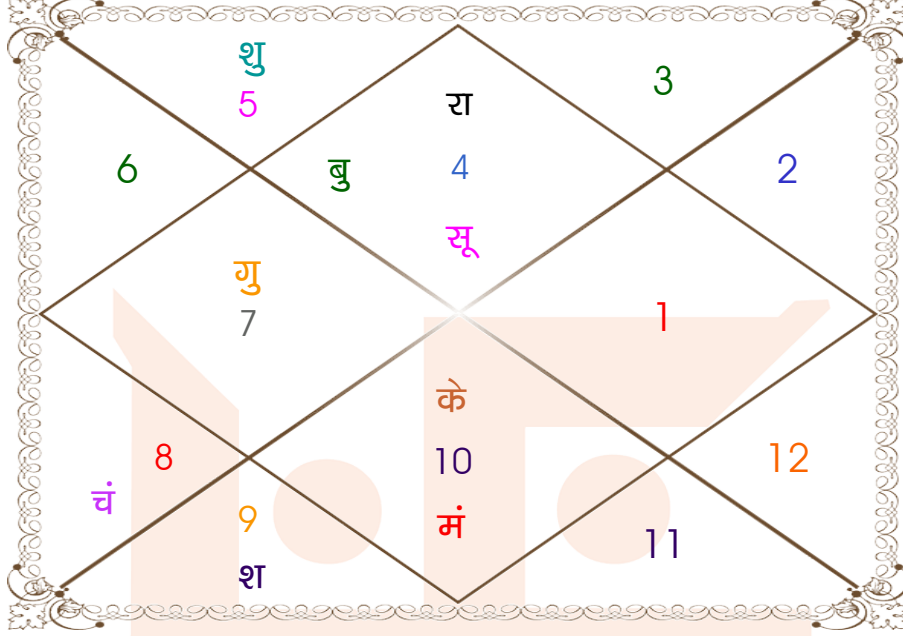
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 11
 तिथि समाप्ति काल _____ : 16:23:45
 जन्म तिथि _____ : 12
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : अनुराधा
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 12:52:57 घंटे
 जन्म योग _____ : ज्येष्ठा
 सूर्योदय कालीन योग _____ : शुक्ल
 योग समाप्ति काल _____ : 07:26:53 घंटे
 जन्म योग _____ : ब्रह्म
 सूर्योदय कालीन करण _____ : विष्टि
 करण समाप्ति काल _____ : 16:23:45 घंटे
 जन्म करण _____ : बव
 भयात _____ : 41:00:08
 भोग _____ : 66:27:25
 भोग्य दशा काल _____ : बुध 6 वर्ष 5 मा 24 दि

घात चक्र

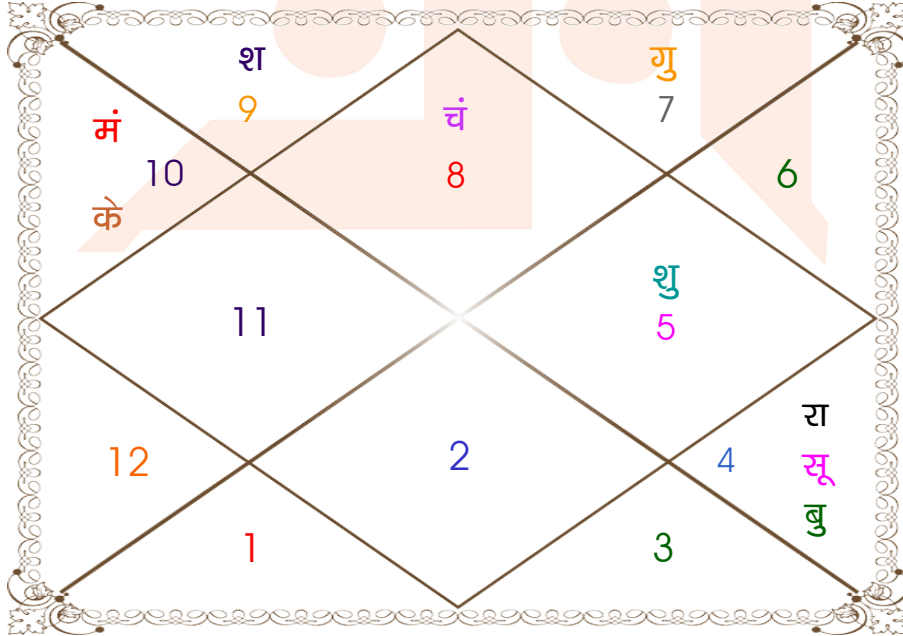
मास _____ : आश्विन
 तिथि _____ : 1-6-11
 दिन _____ : शुक्रवार
 नक्षत्र _____ : रेवती
 योग _____ : व्यतिपात
 करण _____ : गर
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : सिंह
 लग्न _____ : वृश्चिक
 सूर्य _____ : मकर
 चन्द्र _____ : वृष
 मंगल _____ : कुम्भ
 बुध _____ : वृश्चिक
 गुरु _____ : मीन
 शुक्र _____ : मेष
 शनि _____ : कर्क
 राहु _____ : वृष

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

			बु ल सू रा
के मं			शु
श	चं	गु	

लग्न कुंडली

ल बु	सू रा		के मं
शु		गु	श
		चं	

विंशोत्तरी
बुध 6वर्ष 5मा 24दि
बुध

24/07/2018

18/01/2128

बुध	16/01/2025
केतु	17/01/2032
शुक्र	17/01/2052
सूर्य	16/01/2058
चन्द्र	17/01/2068
मंगल	17/01/2075
राहु	16/01/2093
गुरु	17/01/2109
शनि	18/01/2128

योगिनी
भद्रिका 1वर्ष 10मा 26दि
उल्का

19/06/2020

20/06/2026

उल्का	20/06/2021
सिद्धा	20/08/2022
संकटा	20/12/2023
मंगला	19/02/2024
पिंगला	19/06/2024
धान्या	19/12/2024
भ्रामरी	19/08/2025
भद्रिका	20/06/2026



FUTUREPOINT
Astro Solutions



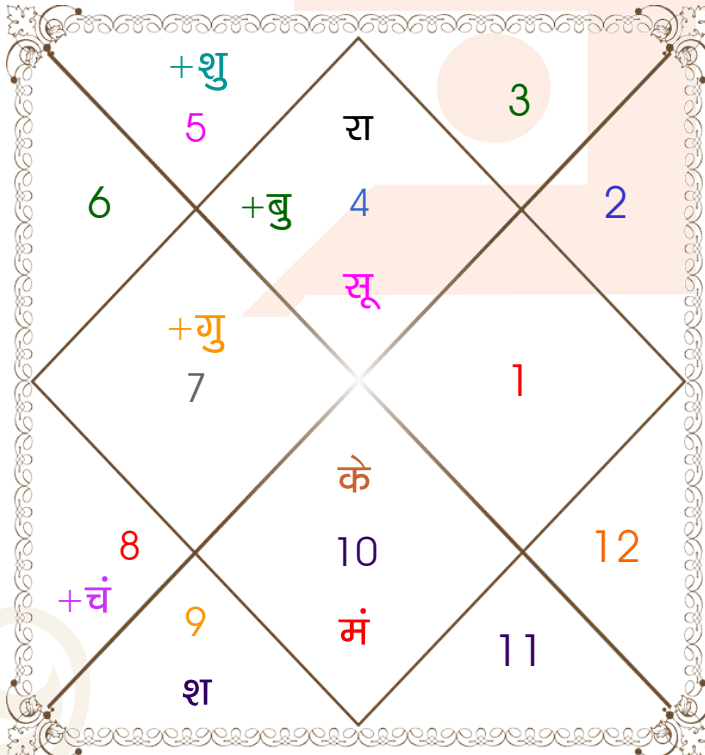
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	01:37:58	308:10:12	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	राहु	---
सूर्य			कर्क	06:57:09	00:57:17	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	बुध	मित्र राशि
चंद्र			वृश्चि	24:54:52	12:00:58	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	नीच राशि
मंगल	व		मक	10:54:22	00:16:00	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	चंद्र	उच्च राशि
बुध			कर्क	29:08:25	00:10:55	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	शत्रु राशि
गुरु			तुला	19:29:49	00:02:23	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	मंगल	शत्रु राशि
शुक्र			सिंह	21:10:14	01:04:46	पूर्वाषाढा	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	शत्रु राशि
शनि	व		धनु	09:54:24	00:03:40	मूल	3	19	गुरु	केतु	शनि	सम राशि
राहु	व		कर्क	11:47:50	00:00:19	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	चंद्र	शत्रु राशि
केतु	व		मक	11:47:50	00:00:19	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	मंगल	शत्रु राशि
हर्ष			मेष	08:21:36	00:00:43	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	---
नेप	व		कुंभ	22:03:53	00:01:02	पूर्वाभाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	---
प्लूटो	व		धनु	25:37:43	00:01:26	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	---
दशम भाव			मीन	22:50:21	--	रेवती	--	27	गुरु	बुध	चंद्र	--

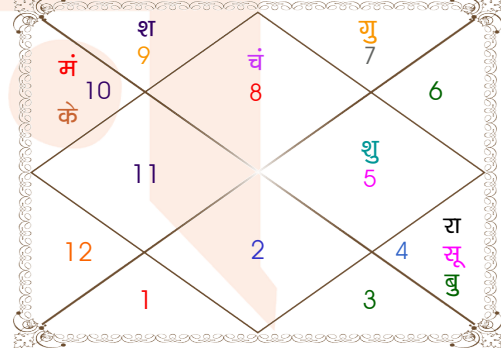
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:06:46

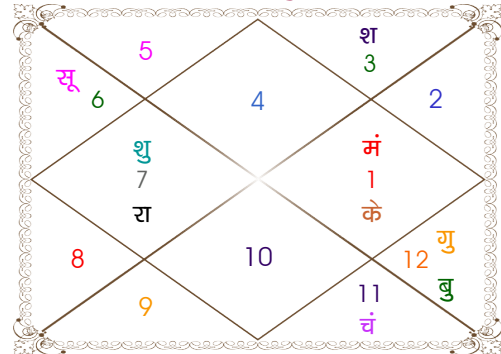
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 15:10:02	कर्क 01:37:58
2	कर्क 15:10:02	कर्क 28:42:06
3	सिंह 12:14:10	सिंह 25:46:13
4	कन्या 09:18:17	कन्या 22:50:21
5	तुला 09:18:17	तुला 25:46:13
6	वृश्चिक 12:14:10	वृश्चिक 28:42:06
7	धनु 15:10:02	मकर 01:37:58
8	मकर 15:10:02	मकर 28:42:06
9	कुम्भ 12:14:10	कुम्भ 25:46:13
10	मीन 09:18:17	मीन 22:50:21
11	मेष 09:18:17	मेष 25:46:13
12	वृष 12:14:10	वृष 28:42:06

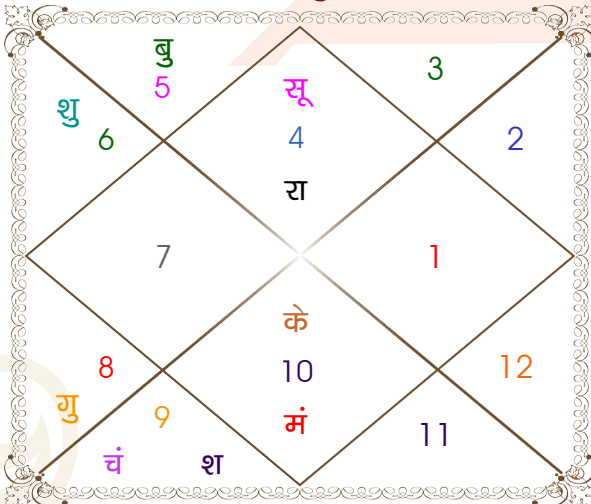
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	01:37:58
2	कर्क	24:45:40
3	सिंह	21:24:16
4	कन्या	22:50:21
5	तुला	27:22:20
6	धनु	01:02:25
7	मकर	01:37:58
8	मकर	24:45:40
9	कुम्भ	21:24:16
10	मीन	22:50:21
11	मेष	27:22:20
12	मिथुन	01:02:25

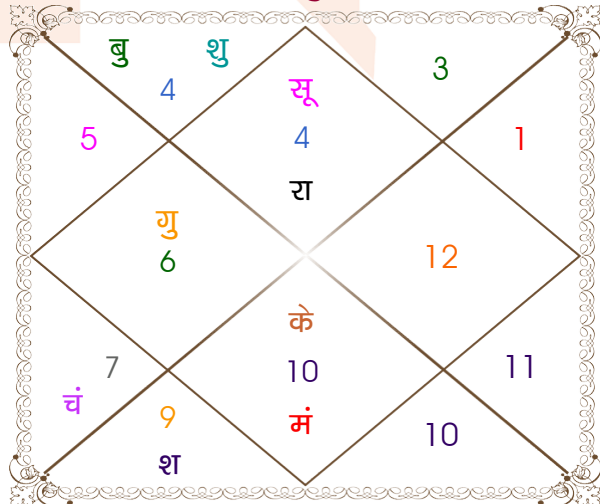
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 6 वर्ष 5 मास 24 दिन

बुध 17 वर्ष 24/07/2018 16/01/2025	केतु 7 वर्ष 16/01/2025 17/01/2032	शुक्र 20 वर्ष 17/01/2032 17/01/2052	सूर्य 6 वर्ष 17/01/2052 16/01/2058	चंद्र 10 वर्ष 16/01/2058 17/01/2068
00/00/0000	केतु 14/06/2025	शुक्र 18/05/2035	सूर्य 05/05/2052	चंद्र 17/11/2058
00/00/0000	शुक्र 14/08/2026	सूर्य 18/05/2036	चंद्र 04/11/2052	मंगल 18/06/2059
00/00/0000	सूर्य 20/12/2026	चंद्र 16/01/2038	मंगल 12/03/2053	राहु 17/12/2060
00/00/0000	चंद्र 21/07/2027	मंगल 18/03/2039	राहु 04/02/2054	गुरु 18/04/2062
00/00/0000	मंगल 17/12/2027	राहु 18/03/2042	गुरु 23/11/2054	शनि 17/11/2063
24/07/2018	राहु 04/01/2029	गुरु 16/11/2044	शनि 05/11/2055	बुध 17/04/2065
राहु 01/02/2020	गुरु 11/12/2029	शनि 17/01/2048	बुध 10/09/2056	केतु 16/11/2065
गुरु 09/05/2022	शनि 20/01/2031	बुध 17/11/2050	केतु 16/01/2057	शुक्र 18/07/2067
शनि 16/01/2025	बुध 17/01/2032	केतु 17/01/2052	शुक्र 16/01/2058	सूर्य 17/01/2068
मंगल 7 वर्ष 17/01/2068 17/01/2075	राहु 18 वर्ष 17/01/2075 16/01/2093	गुरु 16 वर्ष 16/01/2093 17/01/2109	शनि 19 वर्ष 17/01/2109 18/01/2128	बुध 17 वर्ष 18/01/2128 00/00/0000
मंगल 14/06/2068	राहु 29/09/2077	गुरु 06/03/2095	शनि 21/01/2112	बुध 15/06/2130
राहु 02/07/2069	गुरु 22/02/2080	शनि 17/09/2097	बुध 30/09/2114	केतु 13/06/2131
गुरु 08/06/2070	शनि 29/12/2082	बुध 23/12/2099	केतु 09/11/2115	शुक्र 13/04/2134
शनि 18/07/2071	बुध 18/07/2085	केतु 29/11/2100	शुक्र 08/01/2119	सूर्य 17/02/2135
बुध 14/07/2072	केतु 05/08/2086	शुक्र 31/07/2103	सूर्य 21/12/2119	चंद्र 18/07/2136
केतु 11/12/2072	शुक्र 05/08/2089	सूर्य 19/05/2104	चंद्र 22/07/2121	मंगल 16/07/2137
शुक्र 10/02/2074	सूर्य 30/06/2090	चंद्र 18/09/2105	मंगल 31/08/2122	राहु 25/07/2138
सूर्य 17/06/2074	चंद्र 30/12/2091	मंगल 24/08/2106	राहु 07/07/2125	00/00/0000
चंद्र 17/01/2075	मंगल 16/01/2093	राहु 17/01/2109	गुरु 18/01/2128	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 6 वर्ष 6 मा 4 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र 14/06/2025 14/08/2026	केतु - सूर्य 14/08/2026 20/12/2026	केतु - चंद्र 20/12/2026 21/07/2027	केतु - मंगल 21/07/2027 17/12/2027	केतु - राहु 17/12/2027 04/01/2029
शुक्र 24/08/2025 सूर्य 15/09/2025 चंद्र 20/10/2025 मंगल 14/11/2025 राहु 17/01/2026 गुरु 15/03/2026 शनि 21/05/2026 बुध 20/07/2026 केतु 14/08/2026	सूर्य 21/08/2026 चंद्र 31/08/2026 मंगल 08/09/2026 राहु 27/09/2026 गुरु 14/10/2026 शनि 03/11/2026 बुध 21/11/2026 केतु 29/11/2026 शुक्र 20/12/2026	चंद्र 07/01/2027 मंगल 19/01/2027 राहु 20/02/2027 गुरु 21/03/2027 शनि 23/04/2027 बुध 24/05/2027 केतु 05/06/2027 शुक्र 11/07/2027 सूर्य 21/07/2027	मंगल 30/07/2027 राहु 21/08/2027 गुरु 10/09/2027 शनि 04/10/2027 बुध 25/10/2027 केतु 03/11/2027 शुक्र 27/11/2027 सूर्य 05/12/2027 चंद्र 17/12/2027	राहु 13/02/2028 गुरु 04/04/2028 शनि 04/06/2028 बुध 28/07/2028 केतु 19/08/2028 शुक्र 22/10/2028 सूर्य 11/11/2028 चंद्र 13/12/2028 मंगल 04/01/2029
केतु - गुरु 04/01/2029 11/12/2029	केतु - शनि 11/12/2029 20/01/2031	केतु - बुध 20/01/2031 17/01/2032	शुक्र - शुक्र 17/01/2032 18/05/2035	शुक्र - सूर्य 18/05/2035 18/05/2036
गुरु 18/02/2029 शनि 13/04/2029 बुध 01/06/2029 केतु 20/06/2029 शुक्र 16/08/2029 सूर्य 02/09/2029 चंद्र 01/10/2029 मंगल 21/10/2029 राहु 11/12/2029	शनि 13/02/2030 बुध 11/04/2030 केतु 05/05/2030 शुक्र 11/07/2030 सूर्य 01/08/2030 चंद्र 03/09/2030 मंगल 27/09/2030 राहु 27/11/2030 गुरु 20/01/2031	बुध 12/03/2031 केतु 02/04/2031 शुक्र 01/06/2031 सूर्य 20/06/2031 चंद्र 20/07/2031 मंगल 10/08/2031 राहु 03/10/2031 गुरु 20/11/2031 शनि 17/01/2032	शुक्र 07/08/2032 सूर्य 07/10/2032 चंद्र 16/01/2033 मंगल 28/03/2033 राहु 27/09/2033 गुरु 08/03/2034 शनि 17/09/2034 बुध 08/03/2035 केतु 18/05/2035	सूर्य 06/06/2035 चंद्र 06/07/2035 मंगल 27/07/2035 राहु 20/09/2035 गुरु 08/11/2035 शनि 05/01/2036 बुध 25/02/2036 केतु 18/03/2036 शुक्र 18/05/2036
शुक्र - चंद्र 18/05/2036 16/01/2038	शुक्र - मंगल 16/01/2038 18/03/2039	शुक्र - राहु 18/03/2039 18/03/2042	शुक्र - गुरु 18/03/2042 16/11/2044	शुक्र - शनि 16/11/2044 17/01/2048
चंद्र 07/07/2036 मंगल 12/08/2036 राहु 11/11/2036 गुरु 31/01/2037 शनि 08/05/2037 बुध 02/08/2037 केतु 06/09/2037 शुक्र 17/12/2037 सूर्य 16/01/2038	मंगल 10/02/2038 राहु 15/04/2038 गुरु 11/06/2038 शनि 17/08/2038 बुध 17/10/2038 केतु 11/11/2038 शुक्र 21/01/2039 सूर्य 11/02/2039 चंद्र 18/03/2039	राहु 30/08/2039 गुरु 23/01/2040 शनि 14/07/2040 बुध 17/12/2040 केतु 19/02/2041 शुक्र 20/08/2041 सूर्य 14/10/2041 चंद्र 13/01/2042 मंगल 18/03/2042	गुरु 26/07/2042 शनि 27/12/2042 बुध 14/05/2043 केतु 10/07/2043 शुक्र 19/12/2043 सूर्य 06/02/2044 चंद्र 27/04/2044 मंगल 23/06/2044 राहु 16/11/2044	शनि 18/05/2045 बुध 29/10/2045 केतु 05/01/2046 शुक्र 16/07/2046 सूर्य 12/09/2046 चंद्र 18/12/2046 मंगल 23/02/2047 राहु 16/08/2047 गुरु 17/01/2048

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	6
मित्र अंक	3, 4, 6, 9
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही



FUTUREPOINT
Astro Solutions

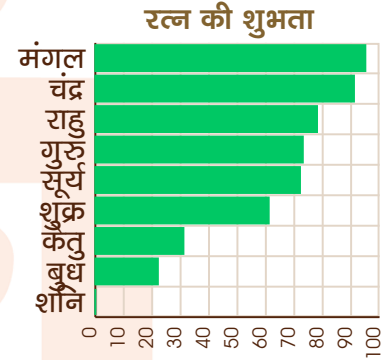


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	95%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	91%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	78%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	73%	सुख, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	72%	स्वास्थ्य, धन
हीरा	शुक्र	61%	धन, धनार्जन, सुख
लहसुनिया	केतु	31%	दाम्पत्य कष्ट, शत्रु व रोग
पन्ना	बुध	22%	रोग, व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	0%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	16/01/2025	78%	78%	95%	47%	73%	67%	0%	78%	31%
केतु	17/01/2032	59%	78%	100%	22%	73%	67%	0%	66%	53%
शुक्र	17/01/2052	59%	78%	95%	34%	73%	73%	0%	84%	44%
सूर्य	16/01/2058	84%	97%	100%	22%	80%	47%	0%	66%	6%
चंद्र	17/01/2068	78%	100%	95%	34%	73%	61%	0%	66%	6%
मंगल	17/01/2075	78%	97%	100%	0%	80%	61%	0%	66%	44%
राहु	16/01/2093	59%	78%	83%	22%	73%	67%	0%	91%	6%
गुरु	17/01/2109	78%	97%	100%	0%	86%	47%	0%	78%	31%
शनि	18/01/2128	59%	78%	83%	34%	73%	67%	0%	84%	6%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढेसाती तृतीय ढैया	24/07/2018-24/01/2020	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साढेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/12/2102-29/11/2105	-----	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया

फल

शुभ
सम
अशुभ
शुभ
सम

क्षेत्र

शत्रु व रोग
दुर्घटना से बचाव
कम खर्च
सुख
सन्तति कष्ट



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म काल में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है अतः आप मांगलिक दोष से युक्त पुरुष हैं। परन्तु शास्त्रानुसार आपके मंगल का दोष भंग हो जाता है अतः ऐसे मंगल से आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही प्राप्त करेंगे। इससे आपका तथा आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु पत्नी के स्वभाव में उग्रता का भाव विद्यमान हो सकता है। इसके शुभ प्रभाव से आप जीवन में समस्त प्रकार से सुखैश्वर्य एवं धन धान्य को अर्जित करेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इनका उपभोग करेंगे।

इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब तो होगा परन्तु विवाह करने में किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा तथा आनन्दपूर्वक सुखद वातावरण में आपका पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न होगा। आप दोनों का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा फलतः विवाह के पश्चात् दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति से व्यतीत होगा। पत्नी के स्वभाव में उग्रता होने के कारण यदा कदा आपसी संबंधों में अल्प मात्रा में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु यह सब थोड़े समय के लिए रहेगा तथा परस्पर संबंध पूर्ववत् घनिष्ठ एवं मधुर रहेंगे।

आपकी कुंडली में सप्तम भाव में स्थित मंगल आपको योग्य जीवन साथी प्रदान करने में सहयोग प्रदान करेगा तथा आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही मधुर एवं घनिष्ठ रहेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इस मंगल की दशम भाव पर दृष्टि होने से आप एक मान सम्मान युक्त प्रतिष्ठित पुरुष होंगे तथा समाज में पूर्ण रूप से यशार्जन करने में भी सफल रहेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में भी आप नित्य उन्नति करते रहेंगे। लग्न पर दृष्टि होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा क्रोध के भाव की अधिकता भी दृष्टिगोचर होगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आपका परिवारिक जीवन सामान्य तथा सुख एवं

शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा परन्तु यदा कदा अशान्ति या कलह का वातावरण भी अल्प काल के लिए उत्पन्न हो सकता है। विद्या प्राप्ति के क्षेत्र में भी आप हमेशा सफलता अर्जित करेंगे। इस प्रकार आपका जीवन पूर्ण सन्तोष एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक शुभ एवं सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या ऐसी मंगली कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष उचित रूप से भंग हो रहा हो। ऐसा उचित मिलान होने पर आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति तथा सफलता अर्जित करेंगे एवं एक भाग्यशाली पुरुष होकर धन धान्य एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे। जीवन में आपको किसी भी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव नहीं रहेगा तथा सभी सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करने में आप सफल रहेंगे।

इसके अतिरिक्त जिस कन्या के सप्तम भाव में ही मंगल विद्यमान हो उस कन्या से विवाह की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भाव में स्थित मंगल जीवन साथी के लिए अच्छा नहीं रहेगा जिस का उसके स्वास्थ्य पर प्रभाव होगा इससे आप दाम्पत्य जीवन का पूर्ण सुखोपभोग करने में परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही इससे दाम्पत्य जीवन में अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न होंगी। इसके अलावा अन्य भावों में स्थित मंगल सभी कुप्रभावों को दूर करेगा। दाम्पत्य जीवन को सुखी तथा शान्ति पूर्वक व्यतीत करने में सहायक सिद्ध होगा। अतः सोच विचार कर ही अन्तिम रूप से निर्णय लेना चाहिए।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग अनुदित रूप में विद्यमान है। लेकिन यह राहु/केतु के साथ सूर्य/चन्द्र होने के कारण विशेष प्रभावशाली है। फलस्वरूप व्यक्तित्व निर्माण के लिए संघर्ष करना पड़ता है। जीवन में अनेक प्रकार की समस्याएँ आती रहती हैं। जिससे जातक को विशेष रूप से क्षति उठनी पड़ती है। जातक अपने कार्य में अनेक बार परिवर्तन करता है। जिसमें केवल नुकसान ही उठाना पड़ता है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में जातक को अधिक क्षति उठानी पड़ती है। इस के प्रभाव से जातक नीच कर्म करने में तत्पर हो जाता है और थोड़ा आलसी तथा पराक्रमहीन हो जाता है। आगे बढ़ने के लिए किये गये प्रयास में अक्सर असफलता ही हाथ लगती है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जीवन मानसिक रूप से अशान्त रहता है। जातक का वैवाहिक जीवन दुःखमय व्यतीत होता है। परिवार के अन्य सदस्य से जातक को केवल नुकसान ही मिलता है। इसके कारण घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है और जातक को विरक्ति भावना पैदा होती है। अपने रिश्तेदार भी समय पर क्षति पहुँचाते हैं। समाजिक प्रतिष्ठा में हानि होती है। न्यायालय से नुकसान उठाना पड़ता है एवं आपको कोई सजा भी मिल सकती है।

इस योग के कारण जातक के जीवन में अनेकों बार रोग व्याधि ग्रसित करती रहती है। जिसमें पैसे अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक विपन्नता आ जाती है। परिणामस्वरूप जातक कर्ज में डूब जाता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक चमत्कारिक समय भी आता है और घर में मांगलिक कार्य भी सम्पादित होते हैं।

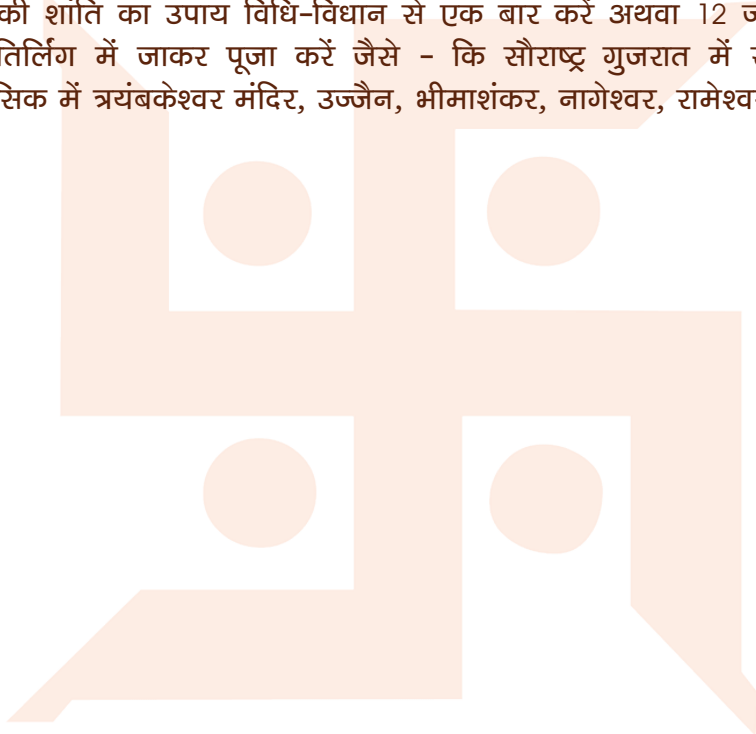
यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. शुभ मुहूर्त में शिवलिंग पर ताम्बे का सर्प अनुष्ठानपूर्वक समर्पित करें।
3. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में मसूर की दाल सात बार प्रवाहित करें।
4. शुभ मुहूर्त में एकाक्षी नारियल अपने ऊपर से सात बार उतारकर सात बुधवार के दिन यमुना जी या बहते पानी में प्रवाहित करें।
5. प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित लहसुनिया धारण करें।
7. केतु मन्त्र का 18 अक्षर हज़ार (18000) जप करें या करवायें। केतु की दशा अन्तर्दशा में करवाना अधिक श्रेयष्कर है।
8. एक वर्ष तक गणपत्यथर्वशीर्ष का नित्यपाठ करें।
9. कम्बल, धूम्रवस्त्र, शस्त्र, सप्तधान्य, तेल आदि शुभ मुहूर्त में समय-समय पर दान करें।

10. सात शनिवार को देवदारु, सरसों तथा लोहवान इन तीनों को उबाल कर स्नान करें।
11. शयनकक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग जीवन भर करें।
12. सर्वतो भद्र मण्डल यन्त्र को पूजित कर धारण करें।
13. शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत आरंभ करना चाहिए। यह व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीज मन्त्र की माला जपें। तदनंतर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पंचम भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र और मंगल के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्णता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के

लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराकमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुःखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराकमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(24/07/2018 - 16/01/2025)

बुध की महादशा 24/07/2018 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 16/01/2025 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध लग्न में स्थित है। बुध की दृष्टि सप्तम भाव पर है। इसके पहले आपकी 19 वर्ष की शनि की दशा चल रही थी। उस दशा के दौरान आपको समृद्धि की प्राप्ति, जीवन वृत्ति में प्रगति तथा यात्रा हुई होगी। बुध की इस दशा के दौरान जीवन का सुख, माता से लाभ, सुखमय वैवाहिक जीवन तथा जीवन में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

बुध के अपनी ही राशि में होने के कारण आपको उत्तम स्वास्थ्य तथा जीवनी शक्ति की प्राप्ति होगी। आप में शक्ति तथा उत्साह होगा तथा आप अशावादी और प्रसन्न होंगे। आपका व्यक्तित्व व रंगरूप आकर्षक होगा। अधिक परिश्रम तथा थकावट के कारण कोई संक्रामक बीमारी, बुखार अथवा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारी हो सकती है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आप स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, वैभानिकी तथा मस्तिष्क से संबद्ध सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर और हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को अचानक लाभ होगा, कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और उच्च पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। आपको उच्चाधिकारियों का सद्भाव तथा अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको कठिन परिश्रम करना होगा। व्यापारी वाणिज्य व्यापार में कुशल होंगे और उन्हें अच्छा लाभ मिलेगा। आर्थिक-समृद्धि तथा जीवन-वृत्ति में उन्नति के लिये यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में जीवन तथा वाहन का सुख मिलेगा। बुध की दशा के दौरान आपको सभी सुख, माता से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपकी जमीन-जायदाद में भी वृद्धि होगी। सम्पत्ति के सभी लेन-देन लाभदायक होंगे। सूर्य की अन्तर्दशा में छोटी तथा शुक्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपनी परीक्षा में सफल होंगे। आप विज्ञान, गणित तथा व्यापार में प्रवीण होंगे। आप तेज हैं और अपनी वाक्पटुता के कारण जाने जाएंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा ललितकला में भी आपकी रुची होगी। आप तेज, कूटनीतिज्ञ, व्यवहार कुशल, सर्वतोमुखी हैं और विविध विषयों में रुचि रखते हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें समृद्धि की प्राप्ति होगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और वे उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे। उनके साथ आपका संबंध बहुत सुन्दर रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा होगी और उन्हें सम्पत्ति तथा साझेदारी में लाभ की प्राप्ति होगी। जीवनसाथी के साथ आपका संबंध अत्यन्त मधुर रहेगा। आपकी माता का जीवन अत्यन्त सफल रहेगा और उन्हें सम्पत्ति, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके पिता का सट्टे तथा ऊँचे कारोबार में निवेश सफल रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को विभिन्न स्रोतों से लाभ, उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे। आपके बड़े भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और उन्हें सम्पत्ति तथा माता से लाभ की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर होंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की मुख्य दशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और आपको सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे केतु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। शुक्र के कारण आपको बच्चों से सुख तथा सट्टे में लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएं होंगी जबकि उसके बाद आनेवाली चन्द्रदशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में लाभ तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी जबकि राहु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु के फलस्वरूप आपको साझेदारों से लाभ तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान कुछ परिवर्तन होगा और धन तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

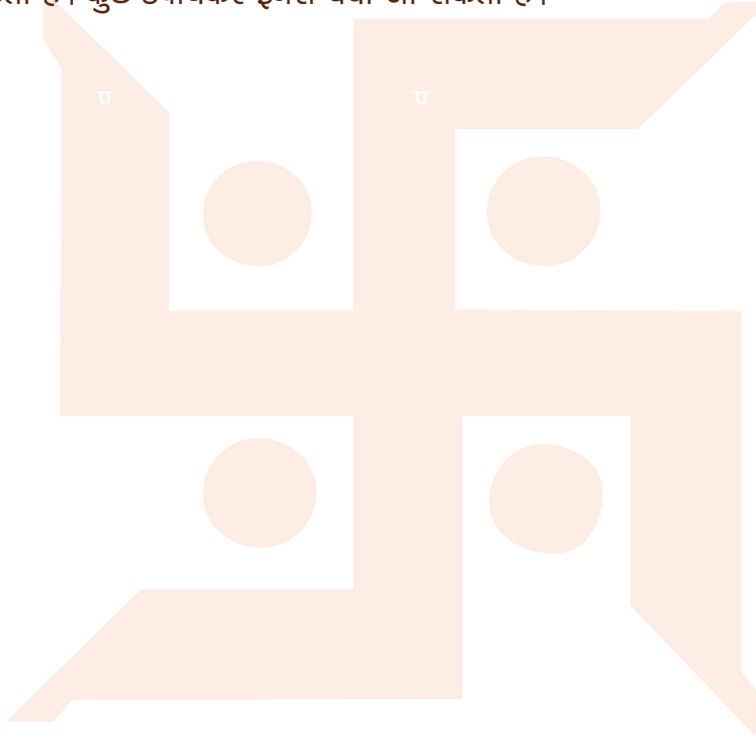


**महादशा :- केतु
(16/01/2025 - 17/01/2032)**

केतु की महादशा 16/01/2025 को आरम्भ और 17/01/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु सप्तम भाव में है जहाँ से इसकी दृष्टि लग्न पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी दशा 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको सम्पत्ति, समृद्धि, यश और ख्याति की प्राप्ति और लम्बी यात्रा हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में यात्रा, व्यापार में वृद्धि और साझेदारों से लाभ होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्ति शाली तथा स्फूर्तिवान होंगे। आपको विषाणुजन्य बुखार, चर्मरोग, छूत की बीमारी, फोड़ा, जनन तथा मूत्राशय संबंधी समस्या हो सकती है। कुछ उपायकर इनसे बचा जा सकता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपको साझेदारों तथा व्यवसाय से लाभ होगा। सट्टे तथा निवेश में लाभ होगा। आपको कार्य में सफलता तथा यश और ख्याति मिलेगी। जीविका-व्यवसाय के लिए उद्योग, इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, धातु अथवा खनिज प्रौद्योगिकी अथवा हाईवेयर निर्माण अथवा कृषि का चयन कर सकते हैं। रत्न, धातु, चमड़े, मशीनरी लोहा और इस्पात, हाईवेयर, खेल-सामग्री आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, आय में वृद्धि तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को यश, ख्याति, आदर, सफलता तथा जीवन में प्रगति होगी। यह दशा व्यवसाय में उन्नति के लिए उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा में आपको सभी सुख मिलेंगे। जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आप एक मकान खरीद सकते हैं। सम्पत्ति के लेन-देन के लिए यह दशा उत्तम है। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी किन्तु, लाभदायक और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आपको अपना स्तर बनाए रखने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। गणित, इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर विज्ञान, भाषा, मेकैनिकल इंजीनियरिंग, प्रशासन और योजना में आपकी रुचि हो सकती है। आप साहसी और आत्मविश्वासी हैं और खेल तथा शिक्षा, अन्य गतिविधियों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को कठिन परिश्रम करना होगा और उनकी छोटी यात्रा होगी। उन्हें आपकी सहायता और मार्गदर्शन की जरूरत होगी। आपके जीवन साथी को यश, ख्याति और धर्म में रुचि होगी। अपने जीवन साथी के साथ आपका संबंध उत्तम रहेगा। आपकी माता की जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी और सफलता मिलेगी जबकि पिता को लाभ, विभिन्न स्रोतों से आय और इच्छाओं की पूर्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे में लाभ और शिक्षा उत्तम होगी। बड़ों की यात्रा होगी और धन तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी और सफलता मिलेगी। शुक्र के कारण आपको लाभ मिलेगा और मनोकामनाओं की पूर्ति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में प्रगति होगी, व्यवसाय में सफलता और लाभ मिलेगा। राहु कुछ बाधा खड़ी कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान शत्रु के कारण कुछ समस्या, स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या और छोटी यात्रा होगी जबकि योगकारक शनि के कारण बच्चों से सुख, सफलता और जीवन का आराम मिलेगा। बुध की अन्तर्दशा में सम्पत्ति और समृद्धि मिलेगी तथा लम्बी यात्रा होगी।

अंतर्दशा :- केतु - केतु
(16/01/2025 - 14/06/2025)

आपके लिए केतु महादशा 16/01/2025 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 16/01/2025 को प्रारंभ होकर 14/06/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप व्यापार में सफल होंगे: साझेदार द्वारा लाभ होगा। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। सार्वजनिक जीवन में सफलता मिलेगी। संयमित जीवन और साधना में रुचि हो सकती है। विवेक और बुद्धि उत्तम होंगे। अतींद्रिय शक्ति प्रबल हो सकती है। नये व्यापार की योजना बन सकती है: धनार्जन उत्तम होगा।

आपके जीवनसाथी की आय अच्छी होगी, मानसिक शांति रहेगी। आपके पिता के सम्मान में वृद्धि होगी, सुख-सुविधा संपन्न होंगे, धनी बनेंगे। माता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए निवेश से लाभ, सौभाग्य, पिता से उत्तम संबंधों का संकेत है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी, परीक्षा में सफल होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, सुख-सुविधाएं उपलब्ध होंगी, विवाद में विजय होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धन में वृद्धि होगी, सहकर्मियों से उत्तम संबंध रहेंगे। परामर्शदाता सफलता प्राप्त करेंगे, लाभ में वृद्धि होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गणेशजी की पूजा करें।

अंतर्दशा :- केतु - शुक्र
(14/06/2025 - 14/08/2026)

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी।

इस अवधि में आपको विभिन्न माध्यमों से धनलाभ होगा। दान-धर्म और समाज सेवा में रुचि होगी।

लोग आपकी मधुर वाणी से प्रसन्न रहेंगे। धन में वृद्धि होगी। अध्यात्म में रुचि होगी। वसीयत आदि से लाभ हो सकता है। धनार्जन उत्तम होगा, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। व्यापार में लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी को साझेदारी से लाभ हो सकता है। पिता को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी। माता की आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए निवेश से लाभ, सुख-साधन, उत्तम शिक्षा, कुछ खर्च, यात्रा आदि का संकेत है।

आपकी संतान लोकप्रिय और सफल होगी; उनकी शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो आय उत्तम होगी, जीवन सुसंस्कृत होगा।

अगर आप कार्यरत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा, सफल रहेंगे। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- केतु - सूर्य
(14/08/2026 - 20/12/2026)

आपके लिए केतु महादशा 16/01/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 14/08/2026 को प्रारंभ होकर 20/12/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप सफल होंगे, प्रगति करेंगे, प्रसिद्धि मिलेगी। उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आप में जन्मजात नेतृत्व के गुण हैं, प्रबंधन क्षमता उत्तम है। आप उच्चपद पर आसीन होंगे, सम्मान मिलेगा। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। इसे नीतिपूर्ण व्यवहार और धैर्य द्वारा सुलझाया जा सकता है। आपकी इच्छाएं पूर्ण होंगी, प्रोन्नति हो सकती है, वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है, व्यापार में लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी का धनार्जन उत्तम होगा, उच्चाधिकारी उनसे प्रसन्न रहेंगे, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे, उच्चपद प्राप्त करेंगे। माता सफल रहेंगी, उच्चपद पर आसीन होंगी।

आपके भाई-बहनों के लिए परिश्रम द्वारा सफलता, सरकार से लाभ, धन, सुख-साधन, साहित्य या मीडिया से लाभ और उत्तम स्वास्थ्य का संकेत है। आपकी संतान भाग्यशाली रहेगी, गुरुजन उनसे प्रसन्न रहेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, यात्राएं होंगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं, तबादला संभव है। परामर्शदाता सफल रहेंगे। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंतर्दशा :- केतु - चन्द्र
(20/12/2026 - 21/07/2027)

आपके लिए केतु महादशा 16/01/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 20/12/2026 से प्रारंभ होकर 21/07/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न और संतुष्ट रहेंगे। सरकार के माध्यम से लाभ हो सकता है। कला और अध्यात्म में रुचि हो सकती है। आपके बहुत से मित्र होंगे; धनार्जन उत्तम होगा। संतान से सुख मिलेगा। लक्ष्य प्राप्ति में सफल होंगे। धन का संचय होगा।

आपके जीवनसाथी धनी, सफल और लोकप्रिय बनेंगे। आपके पिता धनी और भाग्यशाली होंगे। माता का धनार्जन उत्तम होगा, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा।

आपके भाई-बहनों के लिए संचार माध्यम से लाभ, लघु यात्राएं, नरम व्यवहार, साझेदारी से लाभ और कार्यक्षेत्र में सफलता का संकेत है। आपकी संतान लोकप्रिय होगी, सफल रहेगी, शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी और सफल होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं; तबादला संभव है। परामर्शदाताओं को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचन तंत्र की शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

ॐ सौं सोमाय नमः

अंतर्दशा :- केतु - मंगल
(21/07/2027 - 17/12/2027)

आपके लिए केतु की महादशा 16/01/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 21/07/2027 को प्रारंभ होकर 17/12/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपको साझेदारों के माध्यम से लाभ होगा। व्यापार में धनार्जन उत्तम होगा। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। जीवनसाथी के धन से लाभ हो सकता है। कार्यक्षमता और सक्रियता उत्तम होंगी। प्रसिद्धि प्राप्त होगी। तकनीकी और सैन्य क्षेत्रों में सफल हो सकते हैं। कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। आय अच्छी होगी मगर खर्चे भी बढ़ सकते हैं। शिक्षा में सफल रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। उनका स्वास्थ्य उत्तम होगा, धनी बनेंगे, सम्मानित और प्रसिद्ध होंगे।

आपके पिता को निवेश से लाभ होगा, प्रभावशाली मित्र होंगे, धनागम उत्तम होगा। माता को घरेलू सुख मिलेगा, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए निवेश से लाभ, सौभाग्य, सफलता और समृद्धि का योग है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं की सक्रियता और आय में वृद्धि होगी। व्यापारीगण सफल रहेंगे; उनकी आय में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। खानपान में संयम बरतना आवश्यक है। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमानजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- केतु - राहु
(17/12/2027 - 04/01/2029)

आपके लिए केतु महादशा 16/01/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 17/12/2027 को प्रारंभ होकर 04/01/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आपका धनार्जन उत्तम होगा, भौतिक सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, प्रसिद्धि प्राप्त होगी। अन्य लोग आपकी सहायता करेंगे; आप भी औरों की मदद करेंगे। विवाह हो सकता है। दृढ़प्रतिज्ञा होंगे। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। विदेश यात्रा या व्यापार से संबंधित यात्रा संभव है।

आपके जीवनसाथी सफल और लोकप्रिय होंगे। आपके पिता को निवेश से लाभ होगा। माता कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगी, तीर्थयात्राएं होंगी, प्रसिद्ध बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए प्रभावशाली मित्र, आर्थिक प्रगति के अवसर, समृद्धि, इच्छाओं की पूर्ति, सौभाग्य का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में प्रसिद्धि प्राप्त करेगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो विवाह हो सकता है, उच्चपद मिलेगा, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं, अचानक धनलाभ हो सकता है। परामर्शदाताओं की नींव मजबूत होगी, आय बढ़ेगी। व्यापारी विदेश जा सकते हैं, लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शरीर के ऊपरी भाग के रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमानजी की पूजा करें।

अंतर्दशा :- केतु - गुरु
(04/01/2029 - 11/12/2029)

आपके लिए केतु महादशा 16/01/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 04/01/2029 को प्रारंभ होकर 11/12/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आपका घरेलू सुख उत्तम रहेगा, जीवन आनंदमय रहेगा। आप धनी बनेंगे, विलास-सामग्री उपलब्ध रहेगी। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी, धनी बनेंगे। समाज सेवा के कार्य करेंगे। अध्यात्म में रुचि होगी, जीवनसाथी के

माध्यम से लाभ होगा, अप्रत्याशित धन मिल सकता है। खर्च बढ़ सकते हैं, यात्रा हो सकती है ज्ञानार्जन उत्तम होगा, अध्यात्म में प्रगति होगी, शत्रुओं पर विजय मिलेगी।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी, प्रसिद्ध बनेंगे। आपके पिता को अप्रत्याशित धन मिल सकता है, अध्यात्म में रुचि होगी। माता सफल और लोकप्रिय होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए लाभ, धन, सुख-साधन, कार्यों में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में अप्रत्याशित घटना घट सकती है। शिक्षा के लिए लाभकारी परिवर्तन हो सकते हैं। धर्म और अध्यात्म के लिए शुभ समय है।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा, भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ॐ बृं बृहस्पतये नमः

अंतर्दशा :- केतु - शनि (11/12/2029 - 20/01/2031)

आपके लिए केतु महादशा 16/01/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 11/12/2029 को प्रारंभ होकर 20/01/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आप शत्रुओं पर विजयी होंगे। स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी। अधीनस्थ कर्मचारी प्रसन्न रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम होगा। कार्यक्षेत्र में प्रोन्नति होगी या जिम्मेदारियां बढ़ेंगी। उच्चाधिकारियों से संघर्ष के बाद उन्नति होगी। मामा पक्ष के लोगों से लाभ होगा। लक्ष्य प्राप्ति के लिए उत्साह बना रहेगा।

आपके जीवनसाथी की यात्रा हो सकती है; खर्च बढ़ेंगे।

आपके पिता सफल और प्रसिद्ध होंगे। माता की लघु यात्राएं हो सकती हैं, उत्साह में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, अचल संपत्ति का क्रय, कुछ परिवर्तन और अचानक लाभ का संकेत है।

आपकी संतान की आय बढ़ेगी, घरेलू सुख रहेगा, सुख-साधन उपलब्ध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सफल होंगे, आय बढ़ेगी, कार्यालय उत्तम रहेगा। परामर्शदाता भाग्यशाली होंगे। व्यापारियों को धनहानि हो सकती है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए मछलियों को आटे की गोली खिलाएं।